पी.जी.डी.टी.

अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम (पी.जी.डी.टी.) (संशोधित)

सत्रीय कार्य
2025

(जनवरी 2025 और जुलाई 2025 सत्र में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110 068

अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम
सत्रीय कार्य 2025
(जनवरी 2025 और जुलाई 2025 सत्र में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.टी.

प्रिय विद्यार्थियो,

जैसा कि 'अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम' (संशोधित) की 'कार्यक्रम दर्शिका' में आपको बताया गया है कि इस स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम में पढ़ाई के साथ–साथ आपको कुछ सत्रीय कार्य भी करने हैं। इसके लिए छह पाठ्यक्रमों के अंतर्गत आपको एक–एक सत्रीय कार्य करना होगा। ये सत्रीय कार्य आपकी आंतरिक परीक्षा है। अतः इन्हें ध्यानपूर्वक और पूरे परिश्रम के साथ करें। प्रत्येक पाठ्यक्रम के सत्रीय कार्य आप अपनी सुविधा के अनुसार अलग–अलग प्रस्तुत कर सकते हैं और एक साथ भी प्रस्तुत कर सकते हैं :

पाठ्यक्रम	प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि*	
	जनवरी 2025 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए	जुलाई 2025 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए
एम.टी.टी.–051 : अनुवाद : सिद्धांत और परंपरा	30.09.2025	31.03.2026
एम.टी.टी.–052 : अनुवाद : प्रक्रिया और प्रविधि	30.09.2025	31.03.2026
एम.टी.टी.–053 : अनुवाद : भाषिक और सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ	30.09.2025	31.03.2026
एम.टी.टी–054 : प्रशासनिक एवं वाणिज्यिक अनुवाद	30.09.2025	31.03.2026
एम.टी.टी.–055 : अनुवाद : साहित्य और जनसंचार	30.09.2025	31.03.2026
एम.टी.टी.–033 : स्क्रिप्ट लेखन, रूपांतरण एवं दृश्य–श्रव्य माध्यम	30.09.2025	31.03.2026

***नोट : कृपया सभी सत्रीय कार्य प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि से पूर्व अथवा विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित अंतिम तिथि अवश्य भेज दें। ध्यान दें कि सत्रीय कार्य जमा कराने की अंतिम तिथि में परिवर्तन किया जा सकता है। सत्रीय कार्य जमा कराने की अंतिम तिथि के बारे में अद्यतन जानकारी प्राप्त करने के लिए आप इग्नू वेबसाइट देखिए। आपको सलाह दी जाती है कि आप सत्रीय कार्यों को निर्धारित तिथि के पहले ही भेज दें।**

उद्देश्य : प्रस्तुत कार्यक्रम के अंतर्गत आपको अनुवाद सिद्धांत और प्रविधि, अनुवाद के सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों, उसकी प्रक्रिया तथा बारीकियों की जानकारी देते हुए, विविध क्षेत्रों में अनुवाद का अभ्यास कराया गया है। सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य–सामग्री को कितना समझा है और उसे कहाँ तक व्यवहार में ला सकते हैं। यानी आपको इस योग्य बनाना है कि अध्ययन के दौरान जो जानकारी आपको प्राप्त हुई है उसे अपने शब्दों में विधिवत प्रस्तुत कर सकें और अनुवाद कार्य में उसे व्यवहार में लाते हुए अच्छा अनुवाद कर सकें।

सत्रीय कार्य करने से पहले कुछ बातें

1) उत्तर के लिए फुलस्केप कागज का ही इस्तेमाल करें।

2) प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए अलग उत्तर–पुस्तिका बनाएँ। इस तरह आपके चार सत्रीय कार्यों के लिए चार उत्तर–पुस्तिकाएँ होनी चाहिए।

3) अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के दाहिने कोने के सबसे ऊपर अपना नामांकन संख्या, पूरा पता लिखें तथा तिथि सहित हस्ताक्षर करें।

4) अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के बाएँ कोने पर कार्यक्रम का शीर्षक, पाठ्यक्रम का कोड, उसका शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड तथा अध्ययन केंद्र का नाम/कोड लिखें।

आपका सत्रीय कार्य इस प्रकार आरंभ होना चाहिए :

कार्यक्रम का शीर्षक : ..... नामांकन संख्या : .....
नाम : .....
पता : .....
.....

पाठ्यक्रम कोड :.....
पाठ्यक्रम का शीर्षक : .....
सत्रीय कार्य कोड : ..... हस्ताक्षर :.....
अध्ययन केंद्र का नामः ..... तिथि : .....

5) पाठ्यक्रम के कोड तथा सत्रीय कार्य के कोड सत्रीय कार्य पर मुद्रित होते हैं और वहाँ से देखकर लिखे जा सकते हैं। प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

6) अपने उत्तर केवल फुलस्केप कागज पर लिखें और उन्हें अच्छी तरह नत्थी कर दें। बहुत पतले कागज पर न लिखें। बाईं ओर 4 से.मी. का हाशिया छोड़ दें। एक उत्तर और दूसरे उत्तर के बीच कम से कम 4 पंक्तियों का स्थान छोड़ें। ऐसा करने से परीक्षक उचित स्थान पर अपनी टिप्पणी दे पाएँगे।

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

इस सत्रीय कार्य में आपसे तीन तरह के प्रश्न पूछे गए हैं। लंबे निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में, और लघु निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर 200–250 शब्दों में देने हैं। व्यावहारिक अनुवाद संबंधी प्रश्नों के उत्तर समुचित कोश का उपयोग करते हुए प्रसंग और संदर्भानुसार देने हैं।

- प्रत्येक सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़ें और यदि कोई विशेष निर्देश दिए गए हों तो उनका पालन करें। सत्रीय कार्य जिन इकाइयों पर आधारित हैं उन्हें पढ़ लें। प्रश्न के संबंध में महत्त्वपूर्ण बातों को नोट कर लें, फिर उनको व्यवस्थित करके अपने उत्तर की रूपरेखा बनाएँ।
- जब आपको विश्वास हो जाए कि जो उत्तर आप देने जा रहे हैं संतोषजनक है, तब उन्हें साफ–साफ लिखें और जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दें।
- अनुवाद के व्यावहारिक प्रश्नों को करते समय 'कोश' का भरपूर प्रयोग करें। विषय एवं संदर्भ का विशेष ध्यान रखें। हिंदी और अंग्रेजी के कथनों की तुलना करें। यह देखें कि अनुवाद से वही अर्थ निकल रहा है जो मूल सामग्री से निकलता है। यह भी सुनिश्चित करें कि आपका अनुवाद लक्ष्य भाषा की उपयुक्त शैली के अनुरूप है, स्रोत भाषा की छाया मात्र नहीं। अनुवाद में मूल लेखन की–सी सहजता लाने के लिए अपनी कल्पनाशीलता और लेखन–क्षमता का उपयोग करें।
- निबंधात्मक प्रश्नों का उत्तर देते समय प्रस्तावना और निष्कर्ष के संबंध में विशेष ध्यान दें। प्रस्तावना संक्षेप में होनी चाहिए। इसमें यह बताएँ कि प्रश्न से आप क्या समझते हैं और आप क्या लिखने जा रहे हैं। निष्कर्ष में आपके उत्तर का सार होना चाहिए। उत्तर सुसंगत और सुसंबद्ध हों। वाक्यों और अनुच्छेदों में परस्पर तालमेल होना चाहिए। उत्तर सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्न से

संबद्ध होना चाहिए। यह देख लें कि आपने प्रश्न में निहित सभी मुख्य बातों के उत्तर शामिल किए हैं।

सत्रीय कार्य पूरा करने के बाद यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपके उत्तर तार्किक और सुसंगत हों,

ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हों,

ग) उत्तर सही ढंग से लिखे गए हों तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति उत्तर के पूर्णतया अनुरूप हों,

घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबे न हों, और

ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से वर्तनी और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

च) उत्तर अपने हाथ से लिखें। इसे मुद्रित या टाइप न करें। अपने उत्तर को विश्वविद्यालय द्वारा आपके पास भेजी गई इकाइयों से नकल न करें। यदि आप ऐसा करते हैं तो आपको कम अंक मिलेंगे।

छ) अन्य विद्यार्थियों के उत्तरों से नकल न करें, यदि यह पाया जाता है कि आपने नकल की है तो आपके सत्रीय कार्यों को अस्वीकृत कर दिया जाएगा।

ज) प्रत्येक सत्रीय कार्य को अलग–अलग लिखें।

झ) प्रत्येक उत्तर के साथ उसके प्रश्न की संख्या लिखें।

ञ) सत्रीय कार्य को पूरा करके इसे अध्ययन केंद्र के पास भेज दें। अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य की उत्तर–पुस्तिका को किसी भी स्थिति में **मुख्यालय के विद्यार्थी मूल्यांकन प्रभाग को मूल्यांकन के लिए न भेजें।**

ट) अध्ययन केंद्र में सत्रीय कार्य को प्रस्तुत करते समय निर्धारित प्रेषण एवं पावती कार्ड पर अध्ययन केंद्र से (सत्रीय कार्य प्राप्त किए) प्राप्ति दर्ज करा लें।

ठ) यदि आपने क्षेत्र को बदलने के संबंध में निवेदन किया है तो आप अपने सत्रीय कार्यों को अपने पहले के अध्ययन केंद्र में ही तब तक भेजते रहें जब तक विश्वविद्यालय की ओर से आपको क्षेत्रीय केंद्र बदलने की सूचना नहीं भेज दी जाती।

शुभकामनाओं के साथ,

एम.टी.टी.–052
अनुवाद : प्रक्रिया और प्रविधि
सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.टी.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.–052
सत्रीय कार्य कोड : एम.टी.टी.–052/टीएमए/2025
अधिकतम अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

खंड–1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500–500 शब्दों में दीजिए :

1. अनुवाद की प्रविधि से क्या अभिप्राय है? अनुवाद की विभिन्न प्रविधियों की सोदाहरण चर्चा कीजिए। 10

2. अनुवाद पुनरीक्षण के अर्थ और प्रक्रिया का विवेचन कीजिए। 10

3. पारिभाषिक शब्दावली से आप क्या समझते हैं? पारिभाषिक शब्दावली निर्माण संबंधी विभिन्न विचारधाराओं का सोदाहरण परिचय दीजिए। 10

4. निम्नलिखित विषयों पर लगभग 250–250 शब्दों में टिप्पणी लिखिए : 5x2=10
   क) 'रूपांतरण' शब्द–प्रयोग की व्याप्ति
   ख) कंप्यूटर कोश और ऑनलाइन कोश में अंतर

5. कम से कम पाँच महत्वपूर्ण कोशों और उनके कोशकारों के नाम लिखिए। 5

6. निम्नलिखित हिंदी शब्दों को हिंदी वर्णक्रम के अनुसार व्यवस्थित कीजिए : 5

   रक्त, रूपांतरण, रिवाज़, राशि, रुद्राक्ष, रूपिम, रौरव, राशन, राक्षस, रोजगार, रचनात्मक, राष्ट्रगीत, राष्ट्रीयता, राकेश, रेशम

7. निम्नलिखित अंग्रेजी शब्दों को वर्णक्रम के अनुसार व्यवस्थित कीजिए : 5

   staple, strategy, soccer, sapling, supreme, suppress, satisfied, sacrifice, sportsmanship, slot, symphony, sinking, stain, surrounding, satire

8. निम्नलिखित शब्दों का रोमन/देवनागरी में लिप्यंतरण कीजिए : 5

कँवलजीत	Constitution
क्षेमचंद्र	poverty
भर्तृहरि	wrestler
ज्ञानेंद्र	psychology
त्रिलोकीनाथ	fracture

9. पाठ्यक्रम में पारिभाषिक शब्दावली संबंधी किए गए अध्ययन के आलोक में पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की निम्नलिखित तकनीकों/युक्तियों के आधार पर निर्मित बीस पारिभाषिक शब्द और उनके अंग्रेजी पर्याय लिखिए :

क) हिंदी में अंगीकृत पाँच पारिभाषिक शब्द और उनके अंग्रेजी पर्याय
ख) हिंदी में अनुकूलित पाँच पारिभाषिक शब्द और उनके अंग्रेजी पर्याय
ग) हिंदी में नव–निर्मित पाँच पारिभाषिक शब्द और उनके अंग्रेजी पर्याय
घ) हिंदी में अनूदित पाँच पारिभाषिक शब्द और उनके अंग्रेजी पर्याय 20

10. निम्नलिखित सामग्री का हिंदी में सारानुवाद कीजिए : 10

Leadership development has now become the top priority for HR (human resource) professionals with emphasis on leadership as a core capability of all employees across sectors. This new trend has replaced engagement, according to a survey conducted by the Top Employers Institute globally.

There is also a shift towards individuals being responsible for their own development needs. This leads to customized leadership development programmes. Many high-growth organizations in India have a relatively large proportion of millennials in leadership positions. They drive the change in leadership development methods as they prefer to use innovative means for personal development over traditional methods such as formal workshops, training courses and development assignments, in line with the global trend of developing leadership skills individually.

With companies becoming less hierarchical and opting for flatter structures, it is noticeable that they are starting to identify future leaders not by job title or position but by influence and performance. And those future leaders are beginning to get the opportunity to gain broader life and commercial skills, and to step outside their comfort zone, by undertaking challenging projects, either inside the organization or externally, usually outside the scope of their main role. This broader approach to self-development is important as ownership for personal development rapidly shifts to the individual, no longer residing with human resources or line managers, says the report.

With individual ownership also comes the need for a different mindset. Some of the top employers offer training around resilience and mindfulness to help employees make this transition. Intrinsically linked to this mindset is an understanding of wellbeing and a balance between food, rest and exercise, and companies need to encourage this within all employees. We need to make sure that the next generation of leaders do not reach 'burn out'. As most now operate in an always online, always connected business environment the need to alleviate both stress and the pressure of always being 'present' should be very much a part of self development, the report says.

The leadership Development report is based on the findings of the top employers HR Best Practices Survey that surveyed 600 certified organizations in 99 countries and included a sample size of 3,000 employees.

11. नीचे दिए गए अंग्रेजी पाठ और उसके हिंदी अनुवाद को सावधानी से पढ़िए और अनूदित पाठ का पुनरीक्षण कीजिएः 10

मूल :

Treatment options for the depressed child

Psychotherapy or talk therapy has by far been the most effective in treating the depressed child. Under talk therapy we have cognitive therapy, behavioral therapy and what Dr John White, psychiatrist and author of the book *The Masks of Melancholy,* calls grief work. Talk therapy in a nutshell essentially helps a child deal with negative thinking and distorted interpretations of their world. Leading researcher Dr. Paul O' Callaghan in his work among sexually abused children of the Democratic Republic of Congo was immensely successful as he used psychotherapy. Children were encouraged to draw pictures of their traumatic experiences and were encouraged to talk about their feelings in individual sessions.

The use of antidepressants in children is widely debated. The US Food and Drug Administration (FDA) warns against its use among children citing severe side effects. However, antidepressants are still used in very severe cased of depression in children. Parents are often the last to recognize depression in their children and the frustrations of dealing with a depressed child may compound the difficulty before they become fully aware of it. I hope this article will help some parent somewhere to recognize a depressed child and help them overcome their depression.

हिंदी अनुवाद :

तनावग्रस्त बच्चे का इलाज

साइकोथेरेपी या बातचीत इलाज तनावग्रस्त बच्चे के इलाज की सबसे उत्तम विधि है। इसमें ज्ञानात्मक इलाज, व्यवहार संबंधी चिकित्सा व जिसे मनोचिकित्सक व द मॉस्क ऑफ मेलनकोली के लेखक डॉक्टर जॉन व्हाईट, विषाद वर्णन कहते हैं, शामिल हैं बातचीत से इलाज मूलतः बच्चे को नकारात्मक सोच और अपनी दुनिया की विकृत व्याख्याओं से बचाती है। ख्यात अनुसंधित्सु डाक्टर पाल ओ केलेघन ने डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो में यौन शोषण से ग्रसित बच्चों के बीच दीर्घावधि तक कार्य किया। उनका अनुभव है यह कि साइकोथेरेपी ने इन बच्चों को सामान्य जीवन जीने में सहायता की। बच्चों से यह कहा गया कि वे जिस भयावह अनुभाविकता से गुजरे हैं, उसके चित्र बनाएं और उसके बारे में बात करें। जाहिर है कि यह बातचीत अकेले में की जाती थी।

बच्चों के अवसाद के इलाज के लिए तनाव अवरोधक (एन्टीडिप्रेसेंट) दवाओं का प्रयोग किया जाना चाहिए अथवा नहीं, इस पर गंभीर मतभेद हैं। अमेरिका का फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन इसके खिलाफ है क्योंकि इन दवाओं के ढेर सारे साइड इफेक्ट्स होते हैं। परंतु गंभीर रूप से तनावग्रस्त बच्चों के इलाज के लिए एंटीडिप्रेसेंट दवाओं का प्रयोग किया जाता है।

अक्सर माता–पिता अपने बच्चों में तनाव के लक्षण पहचान नहीं पाते और तनावग्रस्त बच्चे के लालन–पालन में आने वाली कठिनाइयां उन्हें कुंठित–परेशान करती हैं। हमें उम्मीद है कि यह अनुच्छेद, माता–पिता को उनके बच्चों में तनाव के लक्षणों की पहचान करने में मदद करेगा और वे अपने बच्चों को तनाव से मुक्त कर सकेंगे।

*****